बी. एड. प्रथम वर्ष
सत्र - 2020 - 2021/22
विषय - समकालीन भारत एवं शिक्षा
यूनिट - 4 (d)
प्रकरण - **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं विद्यालयी वातावरण**
व्याख्यान सं. - 09

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

Continued from previous class...

## विद्यालयी वातावरण के आयाम

विद्यालय के वातावरण का निर्माण भौतिक व मानवीय संसाधनों द्वारा होता है। ये सभी मिलकर विद्यालय के वातावरण का निर्माण करने के आयाम कहलाते हैं। इन्हें हम निम्न प्रकार दर्शा सकते हैं।

विद्यालयी वातावरण के आयाम

| **भौतिक आयाम** | **मानवीय आयाम** |
|---|---|
| पर्याप्त स्थान | प्रबंधन का व्यवहार |
| खेल मैदान | प्रधानाध्यापक |
| पुस्तकालय | अध्यापक |
| शौच एवं जलपान की व्यवस्था | क्लर्क |
| उपकरणों की उपलब्धता | चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी |
| अन्य संसाधन | अभिभावक एवं समाज |

किसी भी विद्यालय के वातावरण में भौतिक आयाम की अपेक्षा मानवीय आयाम का प्रभाव ज्यादा होता है। भौतिक आयाम की कमी से तो समझौता किया जा सकता है किन्तु मानवीय आयाम से समझौता करने पर विद्यालय के अधिगम-वातावरण पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मानवीय आयामों में प्रधानाध्यापक एवं अध्यापक का व्यवहार व इनकी अन्तःक्रिया ही विद्यालय वातावरण करती है। अतः नीचे प्रधानाध्यापक एवं अध्यापक के व्यवहार की चर्चा की जा रही है -

1. **प्राधायनाध्यापक का व्यवहार** - हॉपिन एवं क्राफ्ट (Holpin & Croft) ने प्रधानचार्य के चार

व्यवहार बताए हैं जो विद्यालय के वातावरण का निर्माण करते हैं :-

a. **अलगाव/विलगाव (Aloofness)** - इस स्थिति में प्रधानाचार्य किसी भी स्टाफ से किसी भी प्रकार का भावनात्मक रिश्ता नहीं रखता है। वह स्टाफ से केवल औपचारिकतों को निभाता है। वह नीतियों व नियमों का अनुसरण करने वाला बनता है। ऐसी स्थिति में अध्यापक भी उससे दूर रहते हैं। चूँकि प्रधानाध्यापक ही विद्यालय का नेता होता है अध्यापक भी उसी का अनुसरण करते हैं। वे भी छात्रों से आत्मीयता नहीं दर्शाते, वे भी केवल नियमों की बात करते हैं

b. **दबाव या गति देना (Thrust)** - इस स्थिति मे प्रधानाचार्य विद्यालय को गति प्रदान करने वाला होता है। वह स्वयं के द्वारा किए गए कार्यों का उदाहरण अध्यपकों के सामने प्रस्तुत करता है। उसका व्यवहार अध्यापकों द्वारा सकारात्मक एवं प्रशंसात्मक रूप में देखा जाता है। वे भी उससे प्रेरित होकर कार्य करते हैं। इस प्रकार विद्यालय का वातावरण भी स्वस्थ एवं उन्नति करने वाला होता है।

c. **उत्पादकता प्रिय (Emphasis on Production)** - इस स्थिति में प्रधानाध्यापक विद्यालय के स्टाफों का सूक्ष्म निरीक्षण करता है। वह केवल निर्देशक मात्र होता है। उसके द्वारा कही बातें अंतिम होती हैं। उसका सम्प्रेषण एकतरफ़ा होता है। वह अपने अधीनस्थ अध्यापकों की बातें नहीं सुनता है। उसका उद्देश्य तो उत्पादकता बढ़ाना ही होता है किन्तु उसके व्यवहार के कारण संस्थान का उत्पादन में स्वतः कमी आ जाती है।

d. **विचारपूर्ण/लिहाज (Considerate)** - ऐसी स्थिति में प्रधानाध्यापक अध्यापकों का मानवीय रूप से अधिक ध्यान रखते हैं। अध्यापक भी प्रत्येक स्थिति में प्रधानध्यपक के साथ होते हैं। परिणामस्वरूप इस स्थिति में विकास सर्वोत्तम होता है।

To be continued....